International Journal of Research
*Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers*
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

# भारत–चीन संबंध में डोकलाम विवाद

**कीर्ति**
रिसर्च सकोलर,
राजनीति विज्ञान विभाग
महर्षि दयानंन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक।

**शोध आलेख सार :–**

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में मैंने विश्व स्तर पर चर्चा का विषय रहा डोकलाम विवाद पर विचार करते हुये भारत व चीन के सम्बंधों में इसके परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया है। मैंने डोकलाम क्षेत्र की उपस्थिति को बताया है इसके साथ ही इस विवाद पर भारत व चीन दोनों के पक्ष को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथा विश्व समुदाय का इसके प्रति दृष्टिकोण भी बताया है। अंत में भारतीय विदेश नीति के सरहानीय कदमों की इस विवाद को सुलझाने के संदर्भ में प्रशंसा की है।

**मुख्य शब्दः** डोकलाम, ट्राई जंक्शन, कूटनीति, चिकन नेक, मानसरोवर।

## भारत–चीन संबंध में डोकलाम विवाद

## पृष्ठभूमि

यह सर्वविदत है कि भारत व चीन के मध्यम 1962 के युद्ध के पश्चात सम्बंध कभी अच्छे नहीं रहे। इसका कारण चीन दवारा अपनाई जाने वाली अविश्वसनीय नीतियां रही है जिसके कारण भारत कभी भी चीन पर विश्वास नही करगया औरअगरभारत ने आगे बढ़ करसमस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है तो निराशा ही हाथ लगी है। वर्तमान में दोनों देशों के मध्य एक नया विवाद पैदा हो गया है। वह है डोकलाम विवाद इसका मुख्य कारण इसकी अवस्थिति है। यह एक ट्राई–जंक्शन है जहाँ भारत–चीन और भूटान की सीमा मिलती है। डोकलाम की अगर भौगोलिक अवस्थिति की बात करे तो हम देखते है कि यह एक पठार है जिसको भूटान व चीन दोनों ही देश अपना क्षेत्र मानते है। डोकलाम भूटान के घ घाटी, भारत के पूर्व सिक्किम जिला और चीन के यदोंग काउंटी के बीच है। भारत की सीमा के अधिक नजदीक होने के कारण भारत के लिये चीन का बढ़ता प्रभाव चिन्ताजनक है।वैसे तो भारत का इस क्षेत्र पर कोई दावा नहीं है। दरअसल इस क्षेत्र को लेकर चीन व भूटान के

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

बीच विवाद है वर्तमान में यहां चीन का कब्जा है और भूटान इस पर दावा करता है। भूटान और भारत के बीच 1949 से ही परस्पर विश्वास और स्थाई दोस्ती का करीबी संबंध है। दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग का करार है। 2007 में भारत और भूटान दवारा हस्ताक्षर किये गये मैत्री संधि के मनुच्छेद–2 में कहा गया है ''भूटान और भरत के बीच घन्ष्ठि दोस्ती और सहयोग के संबंधों को ध्यान में रखते हुये भूटान की सम्राज्य की सरकार और भारत गणराज्य की सरकार निकट सहयेग करेगी अपने राष्ट्रीय हितों से संबंधित मुद्दों पर एक–दुसरे के साथ है''।

1988 के बाद से चीन, भूटान के कुछ क्षेत्र पर अतिक्रमण करता आ रहा है। लेकिन डोकलाम में अभी चीनी सेना पीपुल्स की स्थाई उपस्थिति नहीं है। पहली बार चीन डोकोलाम से जूमली में भूटान आर्मी शिविर की ओर एक सपाट सड़क का निर्माण कर रहा है। चुंकि यह कार्य उसने पहले भी किया है परन्तु भूटान इसका विरोध करने में सक्षम नही दिखा। और वैसे भी भूटान इतना शक्तिशाली नहीं है कि चीन के निर्माण कार्य रोक सकें हालांकि भूटान ने राजनायिक चैनलों के माध्यम से इसका विरोध जताया है कि भूटानी क्षेत्र के अन्दर सड़क का निर्माण पहले के समझौतों का उल्लघंन है।

इस क्षेत्र को लेकर भारत के पास दो प्रमुख मुद्दे है जो भारत के लिये प्रत्यक्ष चिन्ता का कारण बना हुआ है। चीन एक तरफा ट्राई–जक्शन बिन्दु बदल रहा है भारत इसे 2012 के एक आपसी समझौते का उल्लघंन मानता है जैसा कि विदेश मंत्रालय के वक्तव्यं में उल्लेख किया गया है कि चीन के सड़क बनाने से इलाके की मौजूदा स्थिति में अहम बदलाव आऐगा। भारत की सिक्युरिटी के लिये ये गंभीर चिन्ता का विषय है रोड़ लिंग से चीन को भारत पर एक बड़ी सैन्य विजय हासिल होगी। इससेस पूर्वोतर राज्यों को भारत से जोड़ने वला कौरिडोर चीन की जिद में आ जायेगा। यहां चीन का मानना है कि इस क्षेत्र पर उनका अधिकार है और यह रोड इसके तिब्बत–सिल्क रोड का एक हिस्सा है जो भारत को पिछे धकेल रहा है। परन्तु वर्तमान में अर्न्राष्ट्रीय इस मुददे पर भारत की तरफ है जापान ने साफ कह दिया है कि ताक के बल पर कोई देश किसी की जमीन नही हथिया सकता। अब इस विवाद में भारत के साथ जापान भी आ गया है। विदेश मंत्री सुष्मा स्वराज ने साफ कर दिया है कि भारत डिप्लौमैटिक चैनल्स के जरिये चीन के साथ बातचीत की कोशिश जारी रखेगा।

अमेरिका ने भी इस समस्या के शान्तिपूर्वक समाधान की बात कहीं है। आखिरकार डोकलाम विवाद को राजनायिक स्तर पर सुलझा ही लिया गया है चीन ने भारत की शर्त मान ली और दोनों से शान्तिपूर्वक विवादित क्षेत्र से सेना हटाने के लिये राजी हो गये क्योंकि इससे पहले केवल भरत पर ही सेना हटाने का दबाव डाला जा रहा था। लेकिन अब दोनों देशों की

सेनाओं का पिछे हटना एशिया महाद्वीप में शान्ति की शुरूआत मानी जा रही है तथा भारत की वैश्विक स्तर पर कुटनीतिक जीत माना जा रहा है क्योंकि संकट के समय भरत एक छोटे देश भूटान के साथ खड़ा रहा है इससे भारत के पड़ौसी छोटे देशों में भारत के प्रति विश्वास का महौल बना है और दक्षिण पूर्व एशिया में भारत की स्थिति मजबूत हुई है तथा विश्व समुदाय को यह सन्देश गयाहै कि भारत अब उभरती हुई महाशक्ति है। यह अब किसी भी सम्राज्यवादी ताकत को अपना गैर कानूनी सम्राज्य नहीं फैलाने देगा।

## भारत व चीन के मध्य डोकलाम विवाद 2017

जब भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका की यात्रा पर थे तभी सिक्किम के पास भारत–चीन विवादसामने आया। हालांकि मौजूदा मामला 4–4 जून 2017 का है। कुछ चीनी सैनिको ने भारतीय क्षेत्र में प्रवेश किया और सिक्किम, भूटान और तिब्बत के बीच त्रि–जंक्शन पर डोकाला क्षेत्र में लालटेन पोजिक्शन के दो पुराने बंकरों को नष्ट कर दिया। चीनी सैनिकों को बाद में भारतीय सैनिकों ने खदेड़ दिया। वह स्थान जहां यह घटना हुई भारत के लिये सामरिक महत्व का है। यह सिलीगुडी गलियारे या चिकन की गर्दन से सिर्फ 30 मिलोमीटर दुर है। चीन ने विवादित डौलम पठार क्षेत्र के झोपलरी में एक सड़क का निर्माण कार्य शुरू किया था। लेकिन भूटान के 'घ' स्थित भारतीय जवानों ने कथित रूप से वास्तविक नियंत्रण रेखा पार कर इसे रोक दिया था। चीन सीमा पर विवाद क कारण कैलाश मानसरोवर जाने वाले भारतीय तीर्थयात्रियों के लिये नाथुलादर्रा भी बंद कर दिया जो हालटी में 2014 से आरंभ हुआ था।

इस प्रकार की घटना साफ तौर पर चीन के सर्कीण सोच को दर्शा रही है पूर्व सेना प्रमुख जनरल विक्रम सिंह का कहना है कि अतीत के रूझान से पता चलता है भारत के हाईप्रोफाइल द्विपक्षीय दौरों के दौरान चीन अक्सर इस तरह की घटनाओं को अंजाम देता है चीन भारत और अमेरिका की बढ़ती नजदीकियों से भी चितिंत है तभी वह आये दिन किसी न किसी तरह से भारत को भयभीत करना चाहा रहा है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार इस विवाद ने एक बात को स्पष्ट कर दिया है कि चीन अब भी अपनी पुरानी सम्राज्यवादी नीति से ग्रस्त है और मौका लगते ही समय–समय पर अपनी इस नीति को अंजाम देने का प्रयास करता रहा है। लेकिन भारत की स्थिति 1962 वाली नही रही। उसने अपने पड़ौसी देशों के हितों में आगे रखकर अपनी साफ्ट पॉवर डिप्लोमेसी से चीन में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

पिछे हटने पर मजबूर किया। तथा पड़ौसी देशों का विश्वास अपने ऊपर बनाये रखा। अतः काहा जा सकता है कि भारत को विदेश मंत्रालय की एक कुटनीतिक जीत हैं।

संदर्भ ग्रंथः

1. www.google.com

2. क्रॉमिकल मैग्जीन सितम्बर 2017

3. The hindu news paper- 31 अगस्त 2017

4. Times of india news paper 28 अगस्त 2017

5. Foreign affairs. com – 7 सितम्बर 2017